कलह रहित जीवन जीना

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण जुलै 2012

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Living Life Without Strife)

कलह रहित
जीवन जीना

विषय सूची

1. झगड़ा क्या है? 1

2. झगड़े के क्या कारण हैं? 2

3. झगड़े के नकारात्मक प्रभाव 12

4. अपने जीवन से झगड़े दूर रखना 14

1
झगड़ा क्या है?

हर जगह झगड़े हैं–परिवार में कार्य स्थल पर, सेवा में, कलीसिया में आदि–और इससे मानव के सम्बन्धों पर बुरा असर पड़ता है। जीवन का शायद ही कोई हिस्सा बचा हो जहाँ यह कैंसर की तरह न फैला हो जिसे झगड़े कहा जाता है। अतः झगड़े क्या है? यह मनुष्यों के बीच में अलगाव, झगड़ा, घृणा, बुराई, लड़ाई, शत्रुता अथवा विवाद आदि है।

घर पर पति और पत्नि के बीच, माता–पिता और बच्चों और आपस में बच्चों के बीच झगड़ा है– जब हम बच्चे थे तो खिलौनों के पीछे लड़े होंगे, बड़े लोग जमीन और धन के कारण लड़ते हैं। हमारे कार्यस्थलों पर झगड़ा है–आपस में टीम के सदस्यों के साथ और मालिक तथा कर्मचारियों के बीच। दुर्भाग्यवश हम अपनी कलीसियाओं में भी झगड़ा पाते हैं, कभी कभी एक ही कलीसिया के लोगों के बीच में लोग रविवार को चर्च में "हाल्लेलुय्याह" गाते हैं, परन्तु अपने चर्च के किसी सदस्य से उनका मनमुटाव रहता है। यह बहुत दुख की बात है कि कभी–कभी परमेश्वर के सेवकों के बीच में झगड़ा होता है।

इस पुस्तक का उद्देश्य है:

- यह समझें कि झगड़े के क्या कारण हैं।
- सउन नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करें जिनसे हमारे जीवनों पर झगड़े का असर पड़ता है।
- सयह सीखें कि किस प्रकार अपने जीवनों से झगड़े को दूर रखें।

जीवन का शायद ही कोई हिस्सा बचा हो जहाँ यह कैंसर की तरह न फैला हो जिसे झगड़ा कहा जाता है।

2
झगड़े के क्या कारण हैं?

ईर्ष्या

बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढँप जाते हैं (नीतिवचन 10:12)।

ईर्ष्या से झगड़ा उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए आप जब पहले दिन काम पर जाते हैं तो आपका परिचय अन्य टीम के सदस्यों के साथ कराया जाता है और शायद आप प्रसन्न होते हैं। परन्तु बाद में पता चलता है कि उस टीम में केवल एक व्यक्ति है जिससे आपका "मेल" नहीं हो पाता और आप उसके साथ नहीं चल पाते हैं। आरम्भ में आपने बहुत प्रयास किया कि उस व्यक्ति से मेल रहे, परन्तु धीरे-धीरे उस व्यक्ति को नापसन्द करने लगे। बाद में आप उसे नज़रअन्दाज़ करने लगे और फिर घृणा करने लगे। यह घृणा एक दिन फट पड़ी, परन्तु उस व्यक्ति को उस समय तक पता भी नहीं चला कि आप उसे नापसन्द करते थे। इस कारण आपकी उस व्यक्ति से की गई घृणा ने आप दोनों के बीच में झगड़ा उत्पन्न कर दिया।

क्रोध/गर्म दिमाग

क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है (नीतिवचन 15:18)।

हम सब के पास क्रोधित होने की योग्यता है। भावनाएं जिसमें क्रोध भी शामिल है-जो हम में बनाया गया है वह ठीक से प्रवाहित होना चाहिए। हमें सही बातों के लिए क्रोधित होना चाहिए-पाप, अन्याय और असहनीयता के प्रति। परन्तु हम में से बहुतों के पास बहुत गर्म दिमाग होता है, यहाँ तक कि छोटी-सी बात भी जो कोई कहता है या करता है, हमें क्रोधित करती है। हमारा अनियन्त्रित क्रोध हमारी कल्पना से

अधिक कलह में डाल सकता है। प्राय: क्रोध भड़कने के कारण झगड़ा होता है जो हमारे रिश्तों को तोड़ देता है।

क्रोध करनेवाला मनुष्य झगड़ा मचाता है, और अत्यन्त क्रोध करनेवला अपराधी भी होता है (नीतिवचन 29:22)।

क्योंकि जैसे दूध के मथने से मक्खन, और नाक के मरोड़ने से लहू निकलता है, वैसे ही क्रोध के भड़काने से झगड़ा उत्पन्न होता है (नीतिवचन 30:33)।

नीतिवचन 30:33 शाब्दिक इब्रानी में यूँ लिखा है: "दूध के मथने से दही बनता है, नाक को दबाने से रक्त निकलता है, क्रोध के दवाब से, बार-बार क्रोधित होने से अथवा इसे मथने से झगड़ा उत्पन्न होता है।"

बकवास, बुराई करना और कानाफूसी करना

जैसे लकड़ी न होने से आग बुझती है, उसी प्रकार जहाँ कानाफूसी करनेवाला नहीं, वहाँ झगड़ा मिट जाता है (नीतिवचन 26:20)।

एक कानाफूसी करनेवाला, बकवास करनेवाला, फुसफुसाने वाला और डींग मारने वाला झगड़ा उत्पन्न कराता है। उदाहरण के लिए: दो अच्छे मित्रों के बारे में विचार करें। कल्पना कीजिए कि एक मित्र छुट्टी पर गया है और इसी बीच कोई आकर इस अच्छे मित्र से उसके विषय में बुराई करे। जब वह मित्र वापस आता है, वह पाता है कि उसका मित्र उससे भिन्न रूप से व्यवहार करता है। यह इसलिए है कि वहाँ एक बुराई करनेवाला उपस्थित था। इसी प्रकार हम जब लोगों के बारे में बिना किसी इरादे के निंदा करते हैं, तब हम झगड़े के बीज बोते हैं जिनसे लोगों के बीच में संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। अत: जब हम दूसरे लोगों के बारे में बात करते हैं। तब हमें सावधान रहना चाहिए।

टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है (नीतिवचन 16:28)।

क्लेश करनेवाला अथवा झगड़ालू होना

जैस अंगारों में कोयला और आग में लकड़ी होती है, वैसा ही झगड़ा बढ़ाने के लिय झगडालू होता है (नीतिवचन 26:21)।

विवाद करने वाला व्यक्ति, जो कुछ हम कहते अथवा करते हैं उन सब से क्रोधित हो जाता है। कुछ ऐसी बात जो उसके व्यक्तित्व में शामिल है, उसे विवाद करने हेतु विवश करती है, जिसके कारण उसका सम्बन्ध सब लोगों से टूट जाता है। ऐसा नहीं कि अन्य लोग गलत हैं, परन्तु इसलिए कि इस व्यक्ति में कुछ गलती है जिससे यह विवादी या झगडालू बन जाता है।

घमण्ड

लालची मनुष्य झगड़ा मचाता है, और जो यहोवा पर भरोसा रखता है वह हृष्टपुष्ट हो जाता है (नीतिवचन 28:25)।

आइए एक उदाहरण पर ध्यान दें जहाँ एक कान्फ्रेन्स के कमरे में सब लोग बैठ कर यह चर्चा कर रहे हैं कि किस प्रकार एक परियोजना को पूरा किया जाए। आप यह मानकर चलिए कि आप भी इस चर्चा के एक भाग हैं और आप सोचकर आए हैं कि आपकी टीम का अगुवा एक उच्च विश्वविद्यालय से आपकी तरह स्नातक नहीं है और आपके स्थान पर वह सबको लिखित निर्देश दे रहा है जिससे आपको चिढ़ लगती है। आपका घमण्ड उसके अधिकार को स्वीकार नहीं करना चाहता क्योंकि आप सोचते हैं कि आप उस से अच्छा काम कर सकते हैं। इससे, झगड़ा उत्पन्न होता है। यदि हम इतने घमण्डी हैं कि दूसरे के अधिकार अथवा विचार अथवा उसके काम करने के तरीकों को स्वीकार नहीं करते केवल इसलिए कि यह हमारे काम करने के तरीके से भिन्न हैं, तो हम लोगों के साथ सम्बन्धों में संघर्ष उत्पन्न करेंगे।

स्वार्थी महत्वाकांक्षा

इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, "यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है। पर देखो, मेरे

पकड़नेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है!" तब वे आपस में पूछताछ करने लगे कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा। उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाता है। उसने उनसे कहा, "अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन् जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने। क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? परन्तु मैं तुम्हारे बीच मं सेवक के समान हूँ (लूका 22:20-27)।

सम्भवतः यीशु ने अपने क्रूसीकरण के पहले चेलों के साथ अन्तिम भोज में प्रभु भोज की विधि प्रथम जानबूझ पर स्थापित की। उसने अपने चेलों को यह समझाने का प्रयास किया कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा और उन्हें छोड़ने वाला है। परन्तु देखिए कि जब चेलों ने उसके छोड़े जाने की बात सुनी तो उन्हें क्या चिन्ता होने लगी। चेलों के मध्य एक झगड़ा उत्पन्न हो गया कि यीशु के बाद उनका अगला "स्वामी" कौन होगा। यही चेले यीशु के साथ रहे, और उसे प्रचार करते, शिक्षा देते और चमत्कार करते देखा। उनके इस विवाद से उनमें झगड़ा उत्पन्न हो गया।

ध्यान दीजिए कि यीशु ने उन्हें किस प्रकार उत्तर दिया कि बड़ा कौन है। उसने उन्हें बताया कि उन्होंने गलत समझा है। उसने उन्हें बताया कि वे संसार की ओर देखते हैं और उसके अनुसार अपने आप को ढालते हैं। यीशु ने उन्हें बताया कि सबसे ऊंचे पदवाला व्यक्ति संसार की दृष्टि में बड़ा हो सकता है, परन्तु उनका नमूना एक सेवक की तरह होना चाहिए। जो परमेश्वर की दृष्टि में अगुवा है। उसने उनसे कहा कि वे अपने बीच में ऐसे व्यक्ति को ढूँढें जो सबसे छोटा हो, क्योंकि वही वह व्यक्ति होगा जो उनका अगुवा बनेगा। इस प्रकार स्वार्थी अभिलाषा या महत्वाकांक्षा झगड़े का कारण होती है।

गलतफहमी

उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानी भाषा बोलनेवालों पर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती (प्रेरितों के काम 6:1)।

यरूशलेम की कलीसिया में झगड़ा था। उसका कारण था कि यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदियों ने इब्रानी भाषा बोलने वालों के विरुद्ध यह शिकायत की कि उनकी विधवाओं को प्रतिदिन के भोजन वस्तु के वितरण में अनदेखा किया जाता है। उन्होंने यह बात प्रेरितों के सामने रखी और उनसे कहा कि वे इसका समाधान करें। इस कलह का कारण गलत समझ थी कि एक वर्ग पर दूसरे वर्ग से अधिक ध्यान दिया जा रहा था।

व्यक्तित्व की भिन्नता

कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें कि वे कैसे हैं।" तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया। परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा। अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज पर साइप्रस चला गया। परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया; और वह कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला (प्रेरितों के काम 15:36-41)।

केवल लूका मेरे साथ है। मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिय वह मेरे बहुत काम का है (2 तीमुथियुस 4:11)।

व्यक्तित्व की भिन्नता भी झगड़े का कारण होती है क्योंकि प्रत्येक का व्यक्तित्व भिन्न होता है और हम अलग-अलग ढंग से काम करते

हैं। हम प्रेरितों के बीच में कलह को देखते हैं– बरनबास और पौलुस (प्रेरितों के काम 15:36–41)। अपनी प्रथम मिश्नरी यात्रा में उन्होंने एक जवान लड़के को अपने साथ लिया जिसका नाम यूहन्ना मरकुस था, जो बरनबास का भतीजा था। यूहन्ना मरकुस बड़े घराने का लड़का था (प्रेरितों के काम में लिखा है कि उसकी माँ के पास बड़ा घर था जहाँ लोग प्रार्थना के लिए मिलते थे)। वह अपने घर में आराम के साथ रहता था लेकिन बरनबास और पौलुस के साथ उसे जलपोतों अथवा गदहों पर बैठकर यात्रा करनी पड़ी। थोड़े दिनों के बाद यूहन्ना मरकुस ने सोचा कि मैं इस कठिन काम के योग्य नहीं हूँ और वापस अपने घर आ गया। पौलुस इस घटना को नहीं भूला था। अत: जब पौलुस और बरनबास अपनी दूसरी मिश्नरी यात्रा पर जाने की तैयारी कर रहे थे और बरनबास ने यूहन्ना मरकुस को अपने साथ ले जाना चाहा, पौलुस ने मना कर दिया क्योंकि पौलुस को याद था कि प्रथम मिश्नरी यात्रा के समय क्या हुआ था।

बरनबास दयालु और तरस खाने वाला व्यक्ति था जो लोगों को दूसरा मौका देने में विश्वास करता था। परन्तु पौलुस ऐसा करना नहीं चाहता था। व्यक्तित्व की भिन्नताओं ने इस प्रकार झगड़ा उत्पन्न कर दिया। परन्तु पौलुस ने अपनी वृद्धावस्था में, जब वह शायद थोड़ा नम्र हो चुका था तब तीमुथियुस को लिखा मरकुस को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के लिय वह मेरे बहुत काम का है (2 तीमुथियुस 4:11)। इस समय तक यूहन्ना मरकुस भी आत्मिक रूप से परिपक्व हो चुका था।

दलबन्दी और गुटबन्दी

क्योंकि अब तक शारीरिक हो। इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और क्या मनुष्य की रीति पर नहीं चलते? क्योंकि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ," और दूसरा, मैं अपुल्लोस का हूँ," तो क्या तुम मनुष्य नहीं? अपुल्लोस क्या है? और पौलुस क्या है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया जैसा हर एक को प्रभु ने दिया (1 कुरिन्थियों 3:3–5)।

कुरिन्थियों की कलीसिया में दलबन्दी थी। एक दल कहता था कि हम पौलुस के मसीही हैं, दूसरा दल कहता था कि हम अपुल्लोस की तरह के मसीही हैं। इस प्रकार एक ही कलीसिया में एक दल पौलुस को बढ़ावा देता था और दूसरा दल अपुल्लोस को बढ़ावा देता था। परमेश्वर ने पौलुस के द्वारा कलीसिया स्थापित की। परन्तु बाद में इस कलीसिया में दलबन्दी हो गई और झगड़ा और विभाजन उत्पन्न हो गया।

पौलुस ने उन्हें झिड़का क्योंकि वे अभी तक शारीरिक स्वभाव के थे और सामान्य लोगों की तरह व्यवहार करते थे। उसने उन्हें बताया कि यह कहना ठीक नहीं है कि कुछ लोग पौलुस के हैं और कुछ अपुल्लोस के। उसने उन्हें बताया कि पौलुस और अपुल्लोस केवल परमेश्वर के सेवक हैं जिनके द्वारा उन्होंने यीशु में विश्वास किया। अतः न तो पौलुस और न ही अपुल्लोस कुछ हैं, बल्कि **परमेश्वर** ही **स्वामी** है।

हमें भी मसीह की देह के विश्वासी होने के नाते एक मन के होना चाहिए-कलीसिया हमारे बारे में, अथवा इस व्यक्ति या उस व्यक्ति के विषय में नही है, परन्तु केवल **यीशु** के विषय में है। हमें ऐसे स्तर तक कभी नहीं आना चाहिए जहाँ हम कह सकें, "हम ऐसे पास्टर हैं" अथवा ऐसे अगुवे अथवा वैसे सेवक हैं, क्योंकि यदि ऐसा होगा, तब झगड़े को मंडली देह में आने का अवसर मिलेगा। जब हम कुछ कलीसियाओं और सेवाओं को संसार में देखते हैं, हम जानते हैं कि उनके विनाश का बड़ा कारण यह है कि लोग कुछ सेवकों का साथ देते है और अन्य कुछ सेवकों को तुच्छ जानते है। पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 3: में लिखा, "कोई मनुष्य मनुष्य पर घमण्ड न करे।" यदि हम सब अपनी आँखें यीशु मसीह पर लगाए रखें, न कि परमेश्वर के जन अथवा कलीसिया के कुछ अगुवों पर, तब हम एक देह की तरह मजबूत बनेंगे और स्थिर होकर एकता में बने रहेंगे। जी हाँ, हमें कलीसिया के अधिकारी और अगुवों का आदर करना है जो कलीसिया में रखे गए हैं, परन्तु हमें यह जानना चाहिए कि अगुवे केवल सेवक हैं जिनके द्वारा **परमेश्वर** हमारी सेवा कर रहा है। यदि आपकी स्थानीय कलीसिया में आपसे कोई पूछे कि आप

किसे सराहते हैं तो यह न कहें कि **'पास्टर'** को, परन्तु यह कहें कि **"यीशु"** को।

यीशु पर अपनी दृष्टि लगाए हुए हम अतिरिक्त दूरी तय करेंगे हुए जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए-अपनी देह के लिए रखी है- और कुछ नहीं, हमें कोई अलग नहीं कर सकता है। मुझे आश्चर्य लगता है जब पास्टर अपनी कलीसिया को बिना बँटवारे के एकता में रखते हैं। बहुत बार हमने पास्टर और सेवकों को यह कहते सुना है कि उनकी कलीसिया दो या तीन भागों में बँट गई है। अब तक एक ही पास्टर ने मुझे बताया है कि उनकी कलीसिया में कोई विभाजन नहीं है। मैं ऑल पीपल्स चर्च को भी ऐसा ही देखना चाहूँगा-जितना परमेश्वर ने इसे बढ़ने के लिए बुलाया है, बढ़े, बहुत से अगुवे और परमेश्वर के सेवक एकता में सेवा करें, परन्तु यीशु पर दृष्टि लगाए रहें न कि किसी पास्टर, अगुवे अथवा विश्वासी पर।

शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमसे पहले से कह देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे (गलातियों 5:19-21)।

और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (रोमियों 8:8)।

तर्क पूर्ण कल्पनाओं के विषय बहुस करना

यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है, तो वह अभिमानी हो गया, और कुछ नहीं जानता; वरन् उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिससे डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे-बुरे सन्देह और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े-झगड़े उत्पन्न होते हैं

जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है, और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है (1 तीमुथियुस 6:3-5)।

उन शब्दों और विचारों पर झगड़ा करना और तर्क करना जो परमेश्वर के वचन में नहीं हैं, संघर्ष का एक और कारण है - कलीसिया में कभी-कभी लोग मूर्खतापूर्ण बातों पर तर्क करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग पानी में बपतिस्मे के बारे में "सही तरीके"-आगे अथवा पीछे होने के बारे में तर्क करते हैं। वे बाइबल के इतिहासकारों का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि वे एक विशेष तरीके से बपतिस्मा देते थे। मैं कहता हूँ कि जहाँ तक एक व्यक्ति पानी के नीचे जाकर जीवित बाहर निकल आया - उसका बपतिस्मा हो गया है। लोगों के विचारों पर झगड़ा करने के बजाए आइए, हम परमेश्वर के सम्पूर्ण वचन पर ध्यान दें और उस पर सहमत हों जो बिना किसी झगड़े का है और लोगों के विचारों को एक तरफ रख दें। तर्कपूर्ण कल्पनाओं से अपने आप को दूर रखें। यदि परमेश्वर के वचन के कुछ सिद्धान्त स्पष्ट नहीं हैं तो हम परमेश्वर के वचन के को जितना समझते हैं, उस के अनुसार जीएं।

मूर्खतापूर्ण प्रश्न

जवानी की अभिलाषाओं से भाग, और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते है, उनके साथ धर्म और विश्वास और प्रेम, और मेलमिलाप का पीछा कर। पर मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रहे, क्योंकि तू जानता है कि इनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं। प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो। वह विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे कि वे भी सत्य को पहिचानें (2 तीमुथियुस 2:23-25)।

मूर्खतापूर्ण और अज्ञानतापूर्ण प्रश्नों को नजरअन्दाज करें क्योंकि उनसे झगड़ा उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए आप अपने कॉलेज के मित्र जॉन को साक्षी देना चाहते हैं जो मसीही परिवार से है और अभी तक विश्वासी नहीं है। आप उससे बड़ी नम्रता से पूछते हैं कि वह चर्च

क्यों नहीं जाता है। वह तुरन्त ही मुँह बिचका कर पूछता कि क्या तुम भी उन "नए जन्म पाए" लोगों की तरह हों। कल्पना कीजिए कि वह आपसे यह भी कहता है कि यदि आप उसे यह भी बताएं कि कैन और हाबिल को पत्नियाँ कहाँ से मिली, तब वह आपकी बात सुनने के लिए तैयार होगा। यह प्रश्न आपको परेशानी में डालता है और आप परमेश्वर से इसका उत्तर पाने के लिए बुद्धि माँगते हैं। तब आप अपने मित्र को बताने का प्रयास करते हैं कि शायद उन्होंने अपनी बहनों से शादी की थी और वह उस बात को ठट्ठों में उड़ाता है। तब आप को क्रोध आता है और आप वहाँ से हट जाते हैं।

अतः यह बुद्धिमानी होगी कि आप ऐसे प्रश्नों को नज़रअन्दाज करें जिनसे झगड़ा होता है। पौलुस चेतावनी देता है कि परमेश्वर के सेवकों को झगड़ा से दूर रहना चाहिए। आपको बाइबल से सम्बन्धित सभी प्रश्नों के उत्तर जानने की ज़रूरत नहीं है। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने से शायद जॉन फिर ऐसे प्रश्न पूछेगा जिससे बहस का माहौल बन जाएगा और शायद उसके साथ आपकी मित्रता टूट जाएगी। इसके बजाए आप जॉन को यह कह सकते हैं कि मैं आपको वह बता सकता हूँ जो आपके लिए उससे कहीं अधिक उपयोगी है और तब मसीह के प्रेम के विषय में बताएं।

यदि हम इतने घमण्डी हैं कि दूसरे के अधिकार अथवा विचार अथवा उसके काम करने के तरीकों को स्वीकार नहीं करते केवल इसलिए कि यह हमारे काम करने के तरीके से भिन्न है। तो हम लोगों के साथ सम्बन्धों में झगड़ा उत्पन्न करेंगे।

3
झगड़े के नकारात्मक प्रभाव

क्योंकि जहाँ डाह और विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है (याकूब 3:16)।

गड़बड़ी और प्रत्येक बुराई के लिए द्वार खोलता है

बाइबल कहती है कि जहाँ निन्दा, स्वार्थ और अपनी भलाई की इच्छा होती है वहाँ कलह विद्यमान रहता है। जब हम किसी के साथ झगड़े में पड़ते हैं तब हम वास्तव में गड़बड़ी और प्रत्येक बुराई के लिए मार्ग खोलते हैं। इससे शैतान के लिए द्वार खोलकर हम उससे कहते हैं कि तू अन्दर आकर हमारे साथ पार्टी मना। तब हम अपने जीवनों में शैतान को निःशुल्क प्रवेश देंगे कि वह जो कुछ चाहे वह कर सकता है–हमारे शरीरों को बीमारियों से नाश करे, हमारे व्यापारों और परिवारों में गड़बड़ी डाले, निराशा, असफलता, धन का आभाव आदि लेकर आए। जब हम लड़ाई–झगड़े में पड़ते हैं तो प्रत्येक प्रकार का शैतान का काम होता है।

उदाहरण के लिए, यदि एक कलीसिया झगड़े को अनुमति देती है तो यह बहुत सम्भव है कि वह शीघ्र ही विभाजित हो जाए। शैतान उस कलीसिया में प्रवेश करने के लिए अवसर लेगा और उस कलीसिया को नाश करने के लिए काम करना आरम्भ करेगा। इसी प्रकार यदि झगड़ा विवाह में प्रवेश करता है जिससे पति और पत्नी में झगड़ा होता है तो शैतान उस घर को नाश कर देगा। हम सब के जीवन में संघर्ष होता है यद्यपि कुछ लोग सोचते हैं कि कुछ विवाहों में संघर्ष नहीं होता है। मेरी पत्नी एमी और मेरा भी भाग है। अतः यदि हम अपने जीवनों में झगड़े को दूर रखने का प्रयास नहीं करेंगे, तो निश्चय ही शत्रु प्रवेश करके हमारे विवाहों को विभाजित करके जीवनों को नाश कर देगा।

अतः हमें हमेशा परमेश्वर से हमारे जीवनों को संघर्षरहित जीने में सहायता माँगनी चाहिए चाहे लोग कुछ भी करें या कहें। यदि हम चाहते

हैं कि हमारे जीवन में कोई भी बुरी बात प्रवेश न करे, तो हमें अपने अपने आपको झगड़ा नामक इस बीमारी से, जो कैंसर की तरह है, चौकस रखना होगा।

4
अपने जीवन से झगड़े दूर रखना

प्रत्येक व्यक्ति झगड़े का अनुभव करता है! हम में सभी के पास ऐसे समय आते हैं जब हम लोगों के साथ झगड़ा करते हैं परन्तु झगड़ा ऐसी खतरनाक बात वस्तु है और हमें इसे अपने जीवन से दूर रखने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

चैन के साथ सूखा टुकड़ा, उस घर की अपेक्षा उत्तम ह जो मेलबलि-पशु ओं से भरा हो, परन्तु उसमें झगड़े-रगड़े न हों (नीतिवचन 17:1)।

सूखी रोटी के साथ एक छोटे स्थान पर रहना उस घर की अपेक्षा अच्छा है जहाँ भोजन का आनन्द और चमकदमक है, जो प्रसन्नता का संकेत करता है, परन्तु वहाँ वास्तव में केवल झगड़ा ही है।

मुक़द्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं (नीतिवचन 20:3)।

झगड़े को नजरअन्दाज करना आदर की बात है, क्योंकि कोई भी मूर्ख कष्ट में पड़ जाता है। झगड़ा आरम्भ करने के लिए अधिक बुद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती है, परन्तु यह आदर की बात है जब एक चरित्रवान पुरुष अथवा एक खरी स्त्री झगड़ा न करने का फैसला करती है।

मुक़द्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं (नीतिवचन 20:3 मैसेज बाइबल)।

अपने जीवनों से झगड़े को दूर रखना एक अच्छे चरित्र की पहचान है और इससे दूर रहना एक आदर की बात है।

संघर्ष को अवसर न दें

झगड़े का आरम्भ बाँध के छेद के समान है, झगड़ा बढ़ने से पहले उसको छोड़ देना उचित है (नीतिवचन 17:14)।

उदाहरण के लिए, कॉफी पीते समय हम अपने मित्र के साथ बातें करते हैं, हम विभिन्न विषयों पर बाते करते और इस पर चर्चा करते हैं कि कौन सबसे अच्छा क्रिकेट का खेलने वाला था। हम कह सकते हैं सचिन, और मित्र ने किसी और का नाम लिया हो और इस प्रकार से चर्चा जारी रहती है। हमने यह भी देखा होगा कि "तापमान" भी बढ़ गया है। यह चर्चा गहराती जा रही है। यह गम्भीर वाद-विवाद की ओर जा रही है। शायद झगड़े तक पहुँच गई है। ऐसे मामले में, जब हम यह देखते हैं कि तापमान बढ़ रहा है तो यह बुद्धिमानी होगी कि वह चर्चा वहीं पर समाप्त कर दें। हमें तुरन्त वह विषय बदलना चाहिए और किसी अन्य विषय पर वार्तालाप करना चाहिए। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि कब ऐसी स्थितियों से बाहर आना है। जब हम बाँध में एक छेद देखते हैं तो हमें वह बन्द करना चाहिए, उससे पहले कि बाँध टूट जाए। आइए हम झगड़े को अवसर न दें!

अपने काम से काम रखें

अपने काम से काम रखना कई बार बहुत सरल लगता है परन्तु कभी-कभी ऐसा करना बहुत कठिन बात होती है। हमें यह सोचना है कि हमें क्या करना है और दूसरों को सोचने दें कि उन्हें क्या करना है। इससे सम्बन्धों में झगड़ा नहीं होता है।

जो मार्ग पर चलते हुए पराये झगड़े में विघ्न डालता है, वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है (नीतिवचन 26:17)।

भारत में हमारे शहरों की सड़कों पर कई बार दो व्यक्तियों को किसी बात पर झगड़ा करते हुए देखा जाता है, जिसके विषय में कोई नहीं जानता। उदाहरण के लिए, कल्पना कीजिए कि एक दिन जब हम यात्रा कर रहे थे तो इस प्रकार का झगड़ा देखा। यद्यपि हम उन लोगों के

लिए, जो लड़ रहे थे, पूर्ण रूप से अजनबी थे, फिर भी ऐसा महसूस करते हुए हमें उस परिस्थिति में "मुख्य न्यायाधीश" बनना चाहिए, हमने झगड़े के दोनों पक्षों को सुना होगा। फिर अचानक बिना सोचे समझे हम भी आस्तीन ऊपर करके उस झगड़े में शामिल हो गए। बाद हमें आश्चर्य हुआ कि हम क्यों और कैसे उस झगड़े मे कूद पड़े। यह अनावश्यक रूप से मुसीबत मोल लेना है। बाइबल इसी बात के लिए हमें चेतावनी देती है, "जो पराये झगड़े में विध्न डालता है, वह उसके समान है, जो कुत्ते को कानों से पकड़ता है।"

"जिस मनुष्य ने तुझ से बुरा व्यवहार न किया हो, उससे अकारण मुकद्मा खड़ा न करना" (नीतिवचन 3:30)-यह समझदारी है और नीतिवचन की पुस्तक में भी इसकी चर्चा की गई है-जैसे रास्ते पर लड़ने वाले उन दो लोगों के मामले में है। उन्होने हमारी कुछ हानि नहीं की, परन्तु हम उनका न्याय करना चाहते थे। परन्तु ऐसे मामलों में यह बहुत बुद्धिमानी होगी कि यदि हम उनकी सहायता करना चाहते हैं तो पुलिस को सूचित करें। यह भी बुद्धिमानी होगी कि किसी अन्य व्यक्ति की समस्या से आप दूर रहें। हमें सदैव अपने काम से काम रखना चाहिए और हमें कभी भी ऐसे कष्टों में नहीं पड़ना चाहिए जो हमारे नहीं हैं!

अपने इरादों को जाँचें

कई बार हमारे इरादे गलत हो सकते हैं। जब हम झगड़े के द्वारा प्रेरित होंगे, तब हम मुसीबत में पड़ जाएंगे।

विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो (फिलिप्पियों 2:3)।

हमें कुछ भी ऐसा नहीं करना चाहिए जो झगड़े से प्रेरित हो। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने हमें ऐसा ईमेल का सन्देश भेजा है जिससे हमें क्रोध आए, तो हमें अगले दिन उस व्यक्ति को वायरस भेजने का फैसला नहीं करना चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे तो हम अपने जीवनों में झगड़े के लिए बड़ा द्वार खोलेगे।

तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन सुख-विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते हैं? तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं; इसलिये तुम हत्या करते हो। तुम डाह करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर पाते; तो तुम झगड़ते और लड़ते हो। तुम्हें इसलिये नहीं मिलता कि माँगते नहीं (याकूब 4:1,2)।

अपने शब्दों की चौकसी करें

हमें अपने शब्दों के प्रति सावधान रहना चाहिए।

बात बढ़ाने से मूर्ख मुक़द्दमा खड़ा करता है, और अपने को मार खाने के योग्य दिखाता है (नीतिवचन 18:6)।

मूर्खतापूर्ण शब्दों को बोलने से हम झगड़े में पड़ सकते है और इससे बड़ा बवण्डर हो सकता है। मूर्खतापूर्ण शब्द लोगों में झगड़ा उत्पन्न करते हैं, अत: हमें अपने उन शब्दों की चौकसी करना चाहिए जिन्हें हम बोलते हैं।

ठट्‌ठा करनेवाले को निकाल दे, तब झगड़ा मिट जाएगा, और वाद-विवाद और अपमान दोनों टूट जाएँगे (नीतिवचन 22:10)।

एक ठ्टठा करनेवाला व्यक्ति आलोचनात्मक शब्दों के अलावा कुछ नहीं कहता है। एक व्यक्ति ऐसे लोगों से दूर रहना चाहता है। उदाहरण के लिए, कल्पना करें कि आपने एक नई कम्पनी में काम करना आरम्भ किया है, और आपको उस व्यक्ति से परिचय कराया जाता है जिसे आपने सोचा था कि वह "प्रशंसनीय" होगा, जो पिछले 25 वर्षो से काम कर रहा है। वह कहता था कि वह इस कम्पनी में "सबसे पुराना" है जो इसके बारे में सब कुछ जानता है। तब वह उन सब नकारात्मक बातों को बताने लगता है जो वहाँ पर हुई थीं। ऐसा लगता है कि उसके पास कोई भली बात आपको बताने के लिए नहीं है। आपको आश्चर्य होता है कि उस कम्पनी में काम करने वाले लोगों के बारे में शिकायतें होने के बाद भी वह व्यक्ति कैसे पिछले 25 वर्षो से यहाँ टिका रहा। बाइबल

कहती है कि ऐसा व्यक्ति बहुत झगड़ा उत्पन्न करता है और हमें उसे हटा देना चाहिए। तब झगड़े और कलह भी समाप्त हो जाएंगे।

हमारे शब्द प्राय: हमें मुसीबत में डाल सकते हैं। अत: हमें अपने शब्दों की चौकसी करना है। कभी-कभी छोटी छोटी छीटांकशी के कारण भी हम कलह उत्पन्न करते हैं। हमने अपने मित्रों के बालों के रंग के विषय में मजाक किया हो और जिस प्रकार हमने शब्द कहे हों, उनसे उन्हें अपमान महसूस हुआ हो। शायद उन्होंने अपने बालों वह रंग करवाने के लिए बहुत रूपये खर्च किए हो। अत: जो हमने कहा है उन्हें वह अपना अपमान लगा हो। इससे हमारी मित्रता पर भी बुरा असर पड़ सकता है। अत: हमें अपने शब्दों के मामलों में सावधान और समझदार होना है ताकि हमें निश्चय हो कि हम मुसीबत में नहीं पड़ेंगे। इन छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखते हुए हम निश्चय करते हैं कि झगड़े का कोई कारण नहीं है।

अपने क्रोध को नियंत्रित करें

क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है (नीतिवचन 15:18)।

एक क्रोधित व्यक्ति-गुस्से वाला व्यक्ति-झगड़ा उत्पन्न करता है। परन्तु जो क्रोध करने में धीमा है वह क्रोध को शान्त करता है। जब मैं 12 वर्ष की आयु में पहली बार बचाया गया था तब मुझे "अनियन्त्रित क्रोध की गम्भीर समस्या थी! एक दिन जब मैं स्कूल में फुटबाल खेल रहा था-जो मेरा मनपसन्द खेल है-एक लड़के ने मुझे गिरा दिया। मैं बहुत गुस्सा हुआ, पीछे मुड़ा और यह नहीं देखा कि कौन है और उसकी पीठ पर तेजी से लात मारी। उस समय मैंने यह भी नहीं देखा कि वह भी एक विश्वासी है और हम एक ही प्रार्थना समूह के भाग थे। उसी समय से उसके साथ मेरी मित्रता का अन्त हो गया। यद्यपि हम दोनों विश्वासी थे, परन्तु हमने अपने क्रोध पर नियन्त्रण नहीं किया। मैंने अपने क्रोध पर नियन्त्रण खो दिया और उसे इस प्रकार चोट पहुँचाई कि शायद वह इसे कभी नहीं भूल पाया। और आने वाले दिनों में मुझे इसके बारे

में पश्चात्ताप् करना पड़ा। वह व्यक्ति प्रभु के साथ चलने में मेरी बहुत सहायता कर सकता था, परन्तु मैंने एक मित्र को खोया क्योंकि मैं अपने क्रोध को नियन्त्रित नहीं कर पाया।

विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर को जीत लेने से उत्तम है (नीतिवचन 16:32)।

यदि हम अपने क्रोध को नियन्त्रित कर सकें तो हम अनॉर्ल्ड शेरज़ेनगर से भी बेहतर समझे जाएंगे। हमारे पास उससे अधिक शक्ति होगी क्योंकि बाइबल कहती है कि यदि हम क्रोध करने में धीमे हो तो शक्तिशाली व्यक्ति से बेहतर है। और वह जो अपने प्राण को वश में करता है वह उससे बेहतर है जो एक नगर को जीत लेता है। मैं अपने आप को बताता हूँ कि यदि मैं अपने क्रोध को नियन्त्रित कर सकूँ तो मैं शक्तिशाली व्यक्ति और उस व्यक्ति से जो एक नगर को जीत लेता है, अधिक शक्तिशाली हूँ। मैं प्राय: नीतिवचन 10:32 को दोहराता रहता हूँ ताकि मैं शान्त रहकर अपने क्रोध को नियन्त्रित कर सकूँ। अत: यदि आप और मैं अपने क्रोध को नियन्त्रण में रखें, तो हम झगड़े को अपने जीवनों से बाहर रख सकते हैं!

झगड़ा करने में जल्दी न करना नहीं तो अन्त में जब तेरा पड़ोसी तेरा मुँह काला करे तब तू क्या कर सकेगा? (नीतिवचन 25:8)।

अपमान को नजरअन्दाज करने की योग्यता का विकास करें

मूढ़ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है, परन्तु चतुर अपमान को छिपा रखता है (नीतिवचन 12:16)।

मूर्ख का क्रोध तुरन्त प्रकट हो जाता है। यदि उसका अपमान होता है तो वह तुरन्त उसका विरोध करता है। उसे उसके विषय में सोचने की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है जो लज्जा को छिपा देता है। वह प्रत्युत्तर नहीं देता है परन्तु उसे भूल जाता है। अपमान को नज़र अन्दाज करने की क्षमता का विकास करें। अपमान

हमारी पहिचान को नहीं बदलता है जब तक कि हम उनका प्रतिरोध नकारात्मक रूप से न करें। वे लोगों के विचार ही हैं। यदि हम यह जानते हैं कि हम मसीह में कौन हैं तो हम वही हैं, जब लोग हमारा अपमान करें तो इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था (1 पतरस 2:23)।

जब यीशु का अपमान किया गया तो उसने विद्रोह नहीं किया और हमें उसी के नमूने का पालन करना है। हमें भी अपमान को अनदेखा करना है और जैसे बत्तख की पीठ से पानी बह जाता है उसी प्रकार हमें भी होना है। तब हम अपने क्रोध को नियन्त्रण कर सकेंगे और विद्रोह नहीं करेंगे।

नम्रता से प्रत्युत्तर देने की योग्यता का विकास करें

कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है (नीतिवचन 15:1)।

उदाहरण के लिए, जब कोई आपसे लड़ाई करने के लिए निकट चला आता है, और आप ऐसा महसूस करते हैं कि वह उसके मुँह से आग निकल रही है और उसके शब्द लाल और गर्म हैं और आपके विरुद्ध निकल रहे हैं, तो आप शान्त रहें। क्योंकि जब आप उन्हें शान्ति और नम्रता से प्रत्युत्तर देंगे, तब आप अपने आप को झगड़े से दूर रखेंगे। एक नम्र उत्तर वास्तव में क्रोध को दूर करता है। परन्तु हममें से अधिकतर लोग इसके विपरीत काम करते हैं। किसी के साथ समझौता न होने की स्थिति में हम सदैव दूसरे को ऊँची आवाज अथवा तेज आवाज में बोलकर उसे पराजित करना चाहते हैं और ये बातें सारी परिस्थिति को ही भंयकर मोड़ दे देती है। इसीलिए बाइबल कहती है कि नम्र उत्तर देने से क्रोध शान्त हो जाता है। यद्यपि दूसरा व्यक्ति क्रोधित है, तौभी हमें नम्रता से उत्तर देने का चुनाव करना चाहिए।

प्रभु के दास को झगड़ालू नहीं होना चाहिए, पर वह सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण और सहनशील हो (2 तीमुथियुस 2:24)।

बाइबल हमें परमेश्वर के सेवक होने के नाते यह भी निर्देश देती है कि हम झगड़ा न करें, परन्तु सबके प्रति नम्र बनें और सिखाने के योग्य और धैर्यवान बनें। अत: हमें नम्रता के साथ प्रत्युत्तर देने की योग्यता का विकास करना चाहिए। हमें सदैव गर्म परिस्थितियों में नम्रता से उत्तर देना चाहिए। कई बार इससे परिस्थितियाँ शान्त हो जाती हैं और हमारे जीवन से झगड़ा दूर रखने में सहायक होती है।

अधीनता में आना

हमें अधीनता में रहने की योग्यता का विकास करना चाहिए। कई बार हम गलत बातों के बारे में इतने कठोर होते हैं–उन बातों के बारे में जिनका वास्तव में कोई महत्व नहीं होता है–और हमारी कठोरता हमारे जीवन में झगड़े का कारण बनती है। इब्राहीम और लूत के उदाहरण पर विचार करें (उत्पत्ति 13:1–18)।

लूत इब्राहीम का भतीजा था। उस देश की यात्रा करते हुए जिसे परमेश्वर इब्राहीम को देने जा रहा था, उन दोनों के पास बहुत से पशु और दास थे। और प्राय: उनके दास आपस में लड़ाई करते थे। उनकी यात्रा के दौरान बहुत झगड़ा होता था। इब्राहीम को पता चला कि क्या हो रहा है और उसने लूत से कहा कि यात्रा के दौरान यह सब कुछ ठीक नहीं है और लूत से कहा कि जो भाग उसे अच्छा लग रहा है वह ले ले और यह कहा कि वह स्वयं उसके विपरीत दिशा में जाएगा। वह वास्तव में लूत की अधीनता में आ गया यह कहते हुए कि वह जो भाग पसन्द करता है, वह ले ले।

लूत ने चारों ओर देखा और सदोम और अमोरा के हरे भरे स्थान को देख कर उसी ओर जाना चाहा क्योंकि वह भूमि उपजाऊ थी। उसने अपने सभी पशुओं और लोगों को लिया वे सब सदोम और अमोरा में चले गए। और लूत के अलग होने पर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि

उठ और उस देश में प्रवेश कर। परमेश्वर ने कहा कि वह उस देश को इब्राहीम को देगा जहाँ जहाँ उसके पैर पड़ेंगे। और उस समय से ही उसके पशुओं की संख्या बहुत बढ़ने लगी। यहाँ तक कि इब्राहीम के सेवक भी मानने लगे कि परमेश्वर ने उनके स्वामी को बहुत आशीष दी है। जबकि लूत जो सदोम और अमोरा में गया था, वहाँ सब कुछ नाश कर दिया गया था और उसे अपने जीवन को बचाने के लिए उन्हीं वस्त्रों में भागना पड़ा। याद रखें यह इब्राहीम ही था जो लूत की अधीनता में आ गया था!

हमें भी बात को नजरअन्दाज करना सीखने की आवश्यकता है। यदि पारिवारिक सम्पत्ति पर झगड़ा चल रहा है और आपको अपने वास्तविक हिस्से से कम दिया जा रहा है, बस अधीनता में आकर जितना दिया जा रहा है उसे स्वीकार करें। या तो आप कठोर बनकर झगड़ा करेंगे और संघर्ष को अपना मित्र बना कर सम्पत्ति के अपने हिस्से को प्राप्त करने का निश्चय करेंगे, अथवा आप इसके प्रति समर्पित होकर संघर्ष को द्वार से बाहर रखेंगे। ऐसा करने से आपके जीवन में परमेश्वर की आशीषें आएगी!

जब हम झगड़े को अपना मित्र बनाते हैं तो स्वर्ग बन्द रहता है। कोई आशीषें नहीं आएगी। परन्तु यदि हम झगड़े को द्वार के बाहर रखेंगे तो परमेश्वर वास्तव में अपनी आशीषें उण्डेल सकता है। यही इब्राहीम के साथ हुआ। जिस दिन लूत अलग हुआ उसी दिन परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि बाकी सब उसी का है और यह कि परमेश्वर उसका मित्र है और वह सब बातों में उसके साथ है। परमेश्वर ने उस मोलभाव को बहुगुणित कर दिया जो इब्राहीम को छोटा लग रहा था, और इसे एक बड़ी आशीष में बदल दिया। जब लूत ने वास्तव में उस भूमि की एक ओर देखा कि वह "उपयुक्त" है तब उसने उपजाऊ भूमि को चुना। उसने इब्राहीम के लिए वह छोड़ा जिसे वह सोचता था कि उसका कोई मूल्य नहीं है। परन्तु परमेश्वर इब्राहीम के साथ था। अतः हमें अधीनता में आना सीखना चाहिए, केवल इसलिए कि हम झगड़े को बाहर रखें और तब हम परमेश्वर की आशीष देखेंगे।

नम्रता निर्बलता नहीं है

परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएँगे (नीतिवचन 337:11)।

नम्रता दूसरे भेष में वास्तव में सामर्थ है। बाइबल कहती है कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे। एक रविवार के समाचार पत्र में लिखा था कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी नहीं होंगे। परन्तु बाइबल अभी भी यह मानती है कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे। शायद लोग इतने लम्बे समय तक जीवित नहीं रहे कि ऐसा होते हुए देख पाएं। परन्तु परमेश्वर कभी असफल नहीं होता है और उसका वचन सत्य है। यह सत्य है कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

शीघ्रता से मेलमिलाप करें

धन्य हैं वे जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे। जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे, और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। मैं तुझ से सच कहता हूँ कि जब तक तू कौड़ी-कौड़ी भर न दे तब तक वहाँ से छूटने न पाएगा (मत्ती 5:9, 25,26)

सब से मेल-मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा (इब्रानियों 12:14)।

जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो (रोमियों 12:18)।

यीशु ने हमें निर्देश दिया है कि हम अपने बैरियों से तुरन्त मेलमिलाप करें इससे पहले कि वे हमें न्यायालय में ले जाए और वहाँ न्यायधीश हमें दण्ड की आज्ञा दे। हमें सदैव शान्ति करनेवाले, अधीनता में रहने वाले और सुनी-अनसुनी करने वाले बनना चाहिए। जहाँ तक हमारा उद्देश्य झगड़े को अपने जीवन से अलग रखने का है और यदि अधीनता में आने के द्वारा हम ऐसा कर सकते हैं, तो यह निश्चित है कि

परमेश्वर की आशीषें हमारे जीवन में आएंगी। अधीनता के कारण हम जो कुछ खोते हैं, परमेश्वर वह हमें अपनी आशीषों के द्वारा कई गुणा दे सकता है!

गलतियों का हिसाब न रखें

उन गलतियों का हिसाब न रखें जो लोगों ने की हैं। उदाहरण के लिए, जब आप सामान्य रूप से किसी व्यक्ति से बात कर रहे हैं, तब अचानक वह व्यक्ति आपको उस गलती के लिए दोषी ठहराने लगता है जो आपने उसके साथ 25 वर्ष पहले की थी। आप उसे बहुत पहले ही भूल गए थे, लेकिन वह नहीं भूला है। वह न केवल उस अपराध के दिन को स्मरण रखता है, बल्कि वह उस समय व आपके बारे में भी सब कुछ याद रखता है।

बाइबल कहती है कि प्रेम "अनरीति नहीं चलता, अपनी ही भलाई नहीं चाहता, गुस्सा नहीं होता, बुराई नहीं सोचता" (1 कुरिन्थियों 13:5)। प्रेम गलतियों का हिसाब नहीं लेता है, न ही अन्य लोगों के पापों का हिसाब रखता है। अतः यदि हम संघर्ष रहित जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें अन्य लोगों की स्लेटों को प्रतिदिन साफ रखना सीखना होगा। हमें उनके उन अपराधों का हिसाब नहीं रखना चाहिए जो उन्होंने हमारे विरुद्ध किए हैं। इससे संघर्ष हमारे जीवन से दूर रहेगा।

जो दूसरे के अपराध को ढाँप देता, वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार-बार करता है, वह परम मित्रों में भी फूट करा देता है (नीतिवचन 17:9)

भरपूरी के साथ और शीघ्रता से क्षमा करें

इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिये कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल-मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा (मत्ती 5:23,24)।

जब हम पुरानी बातों को दोहराते हैं तो हम मित्रता को खोते और नाश करते हैं। हमें पुरानी बातें भूलना चाहिए और उन्हें छोड़ना चाहिए अन्यथा हम मित्रता को नाश कर देंगे। यदि हम अपराध को छिपा देते हैं तो इसका अर्थ है कि हम प्रेम का अनुसरण कर रहे हैं। हमें शीघ्र ही भरपूरी के साथ क्षमा करना चाहिए। यीशु ने कहा कि यदि हम प्रार्थना में परमेश्वर के पास जाए, और यह याद आए कि किसी ने हमारे विरुद्ध कुछ गलती की है, तो हमें प्रार्थना करने से पहले उसका समाधान करना चाहिए। अतः जब जब ऐसी बातें हों और हम उनका समाधान करते रहें, तो हम किसी भी समय प्रार्थना कर सकते हैं। इसका अर्थ है कि तुरन्त क्षमा न करने के बजाए, हम लम्बा हिसाब-किताब रखते हैं, तब हमें इधर-उधर भाग-दौड़ करना पड़ता है, और क्षमा माँगनी पड़ती है, उससे पहले कि हम वास्तव में प्रार्थना आरम्भ करें। हमें उसी समय क्षमा को प्रवाहित करना चाहिए जब अपराध होता है, उसे भूल जाएँ, उसका समाधान करके उस मामले को बन्द करें-स्लेट को पोंछकर साफ करें। तब हम किसी भी समय प्रार्थना करने के लिए तैयार होंगे। जब पतरस यीशु से यह पूछने आया, "हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?" यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक" (मत्ती 18:21,22)।

शायद यह यूहन्ना ही यीशु का प्रिय चेला था जो पतरस को बहुत कष्ट दे रहा रहा, और पतरस इसे सहन नहीं कर सका। तब उसने इस विषय पर यीशु से चर्चा करने का फैसला किया और उसने उसका नाम लिए बिना, यीशु से पूछा कि उसे कितनी बार किसी व्यक्ति को क्षमा करना चाहिए। यीशु को मालूम था कि क्या बात चल रही थी। अतः जब पतरस ने उससे पूछा कि क्या उसे सात बार क्षमा करना चाहिए, यीशु ने उत्तर दिया, "सात के सत्तर गुने तक।" दूसरे शब्दों में, यीशु पतरस को बता रहा था कि उसे क्षमा करने में उदार होकर क्षमा करते रहना चाहिए। हमें गलतियों का हिसाब नहीं रखना चाहिए, और यदि हम ऐसा कर सकते हैं तो ऐसा कोई कारण नहीं कि हमें लोगों के साथ झगड़ा करना पड़े। सब कुछ क्षमा किया गया है!

शैतान के कामों को बाँधे

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं (इफिसियों 6:12)।

झगड़ा और गड़बड़ी शैतान की कार्यविधि के कारण भी हो सकते हैं। यद्यपि प्रायः हम अपने जीवनों में झगड़ा के लिए जिम्मेदार होते हैं, परन्तु ऐसे समय भी होते हैं जब हमारे सम्बन्धों में झगड़ा और गड़बड़ी का कारण प्रत्यक्ष रूप से शैतान का काम हो सकता है जो वह करना चाहता है। हमने भी कुछ गलती नहीं की है और दूसरों ने भी कोई गलती नहीं की है, परन्तु हम अपने सम्बन्धों में कुछ गलत होता हुआ पाते हैं। वैसी बात नहीं है जैसी होनी चाहिए। ऐसी परिस्थिति में, यह बहुत सम्भव है कि शैतान उस सम्बन्ध को नाश करना चाह रहा है। झगड़ा की आत्मा अन्दर आती है और उस सम्बन्ध को तोड़ने की कोशिश करती है। यहीं पर हमें परमेश्वर के द्वारा दिए गए अधिकार के साथ खड़े होकर वचन की तलवार का प्रयोग करना है। हमें परमेश्वर के वचन को बोलना होगा और उस सम्बन्ध में शान्ति की घोषणा करनी होगी–यह घोषणा करें कि यह राज्य का सम्बन्ध है जहाँ धार्मिकता, शान्ति और आनन्द है। हमें सदैव यह कहना चाहिए, "हम अपने सम्बन्धों में कभी भी झगड़ा या विभाजन को सहन नहीं करेंगे।" हम परमेश्वर के द्वारा दिए गए अधिकार का प्रयोग कर के झगड़े की आत्माएं अपने सभी सम्बन्धों से दूर रख सकते हैं। हमें ऐसा शान्ति को स्थापित करने के लिए करना चाहिए।

चुनौती

व्यक्ति के रूप में

रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है; इसलिए हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें। जैसा दिन को सोहता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें; न कि लीला क्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में। वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो (रोमियों 13:12–14)।

व्यक्ति के रूप में, हमें झगड़ों को अपने जीवन से बाहर रखने के लिए बुलाया गया है। वह दिन निकट है! अतः हम अंधःकार के कामों को त्याग दें और ज्योति के हथियार धारण करें। हम यह कैसे करते हैं? परमेश्वर का वचन कहता है कि हम शालीनता के साथ चलें। शालीनता से चलने का अर्थ क्या है? हमें ऐसा चलना है जैसे हम दिन में चल रहे हैं, अन्धकार के सारे कामों से, कलह से मुक्त होकर। हम दिन के लोग हैं, रात के नहीं। हमें शालीनता से चलना है और यीशु को पहन लेना है। हम सबको यह चुनाव करना है कि हम लड़ाई–झगड़े से मुक्त जीवन बिताएंगे। हमारे मित्रों, पड़ोसियों और जिन लोगों के साथ हम रहते हैं, उनके साथ लड़ाई–झगड़े के कई अवसर हमें प्राप्त होंगे! उदाहरण के तौर पर, जब हमारे अपार्टमेंट में हमारे पड़ोसी तेज़ आवाज़ में संगीत सुनते हैं, तब हमारी प्रतिक्रिया यह हो सकती है कि हम भी तेज़ आवाज़ में संगीत सुनें। बल्कि हम यह चुनाव कर सकते हैं कि हम इस तरह प्रतिक्रिया व्यक्त न करें जिससे झगड़े–फसाद उत्पन्न होते हैं।

यह हम सबके लिए चुनौती है! हमें खुद को यह बताते रहना है, "चाहे जो हो जाए, चाहे दूसरे लोग जो कहें या करें, हमारे जीवन में लड़ाई–झगड़े के कितने ही अवसर क्यों न आएं, हम उनसे मुक्त जीवन बिताएंगे!"

देह (मण्डली के रूप में)

देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें! यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच गया। वा हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन को आशीष ठहराई है (भजन (133:1–3)

हमारी कलीसियाओं में भी, लड़ाई झगड़ा नहीं होना चाहिए। जहां पर लड़ाई झगड़े नहीं होते, वहां पर हम अभिषेक और परमेश्वर की

ताज़गी का अनुभव करेंगे। वहां पर ओस होगी, अतः जीवन, आशीष और शांति होगी। इस प्रकार की कलीसिया का होना हमारे हाथ में है! हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हम लड़ाई–झगड़े से दूर रहने वाले लोग हों – हर कोई प्रेम, शांति और मेल के साथ चलें। हर एक को लड़ाई झगड़े से हमारे जीवनों को दूर रखने का महत्व समझना चाहिए। यदि कोई विवाद उत्पन्न होता है, तो हमें तुरंत उसे सुलझाना चाहिए, माफ कर देना चाहिए, भूल जाना चाहिए और उसे दोहराना नहीं चाहिए! केवल अच्छी बातों को दर्ज करें – सफलताओं को, जिन बातों को हमने हासिल किया है। असफलताओं और नकारात्मक बातों को भूल जाएं। लोगों की गलतियों को भूल जाएं और उन गलतियों को मिटा दें। क्योंकि बाइबल कहती है कि परमेश्वर हमारे पापों को गहरे सागर में डाल देता है, और फिर उन्हें स्मरण नही ंकरता! यदि परमेश्वर हमारे पापों को स्मरण नहीं करता, तो हम क्यों उन पापों को स्मरण करने का कष्ट करें। हमें अपनी स्मरण कोशिकाओं का उपयोग किसी सकारात्मक बात के लिए करें।

हमारे इरादे महत्वपूर्ण हैं

जब हम गलत इरादे से गलत काम करते हैं,
तब हमारे मध्य में लड़ाईयां और युद्ध हो सकते हैं।
अतः हमें हमेशा अपने इरादों को जांचने की और
उनका ध्यान रखने की ज़रूरत है।
यदि हमारा इरादा उन व्यक्तियों का बदला लेने का है,
जिन्होंने हमारे साथ कुछ गलत किया,
तो यह इरादा कलह से प्रेरित है,
और हमें उसे पूरा नहीं करना चाहिए।

पश्चाताप और प्रार्थना

हम में से कुछ लोग ऐसे काम करते हैं, जो लड़ाई—झगड़े से प्रेरित होते हैं! लेकिन हम उसे बदल सकते हैं! प्रार्थना करें: ***"परमेश्वर, मैं आपकी उपस्थिति में खड़ा रहता हूं और अपने हृदय को नम्र करता हूं। मैं जानता हूं कि कुछ बातें जो मैं कर रहा हूं, लड़ाई झगड़े से प्रेरित हैं! लेकिन मैं उसे बदलना चाहता हूं।"***

हम में से जो लोग बिना सोचे समझे अपने शब्दों का उपयोग करते हैं – यह न जानते हुए कि हम अन्य लोगों को चोट पहुंचा रहे हैं, गलत बात बोलते हैं, और यही कारण है कि वे अपने कई मित्रों को खो देते हैं, तब हम प्रार्थना कर सकते हैं, ***"परमेश्वर, मैं अपने शब्दों के विषय में और सावधान रहना चाहता हूं।"***

हम में से कुछ लोग अत्यंत क्रोधी स्वभाव के होंगे, वे जल्द ही क्रोधित हो जाते हैं और अपना आपा खो बैठते हैं। परंतु परमेश्वर का वचन कहता है कि यदि हम अपने क्रोध पर नियंत्रण रख सकते हैं, तो उस व्यक्ति से अच्छे हैं जो नगर पर राज्य कर सकता है। प्रभु से मांगे: ***"परमेश्वर, मुझे अनुग्रह प्रदान कीजिए कि मैं अपने क्रोध को पवित्र आत्मा की अधीनता में लाऊं। मुझे अपमान को नज़रअंदाज करने योग्यता दीजिए क्योंकि मैं जो हूं उसे यह बदल नहीं सकता जब तक कि मैं उसके प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त न करूं। भले ही कोई गुस्ताखी के साथ बोले, प्रभु सौम्यता के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अनुग्रह मुझे दीजिए। मुझे अधीन होने और उस बात को छोड़ देने का अनुग्रह दीजिए, क्योंकि मेरा हठीलापन जो उन बातों को पकड़े रहता है, लड़ाई झगड़ा उत्पन्न कर सकता है। जब लड़ाई झगड़ा मेरे जीवन से दूर हो जाएगा तक आशीषें आएगी। परमेश्वर! मेरे जीवन में यह बदलाव लाईये ताकि मैं पूर्ण रूप से संघर्षरहित जीवन जी सकूं।"***

कुछ लोगों की याददाश्त अच्छी होती हैं और वे लोगों द्वारा की गई गलतियों का हिसाब रखते हैं। परमेश्वर से प्रार्थना करें: ***"प्रभु, मैं आपसे बिनती करता हूं कि मेरी याददाश्त को मिटाकर साफ कीजिए और मेरी सहायता कीजिए कि मैं उन गलत बातों को त्याग सकूं या भुला सकूं जो दूसरों ने मेरे साथ की हैं।"***

पतियों और पत्नियों! हर वैवाहिक जीवन में लड़ाई झगड़े और संघर्ष का अवसर होता है। हर दिन के अंत में यह कहना हमारे हाथ में है कि हम अपने जीवनसाथी की गलतियों को पोंछ देंगे और गलत बातों का हिसाब नहीं रखेंगे। प्रार्थना करें: ***"परमेश्वर, हमारे जीवन में कार्य कीजिए और हमारे हृदयों में बदलाव लाईये।"***

पश्चाताप और प्रार्थना के फलस्वरूप, चंगाई प्राप्त होगी और टूटे हुए रिश्ते आपस में जुड़ जाएंगे जो लम्बे समय से ऐसे थे। न केवल हमारे हृदयों में, बल्कि हमारे जीवनों में जिन लोगों के साथ हमारा रिश्ता है, उनके मध्य भी शांति, मेल और अच्छी समझ होगी। परमेश्वर द्वारा किया गया कार्य उन सभी टूटे हुए रिश्तों को प्रभावित करे, आपस में मेल–मिलाप, शांति और आनंद को उत्पन्न करे, क्योंकि परमेश्वर ने हमारे हृदयों को बदल दिया है।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

हर जगह संघर्ष है–परिवार में कार्य स्थल पर, सेवा में, कलीसिया में आदि–और इससे मानव के सम्बन्धों पर बुरा असर पड़ता है। जीवन का शायद ही कोई हिस्सा बचा हो जहाँ यह कैंसर की तरह न फैला हो जिसे संघर्ष कहा जाता है।

अतः संघर्ष क्या है? यह मनुष्यों के बीच में अलगाव, झगड़ा, घृणा, बुराई, लड़ाई, शत्रुता अथवा विवाद आदि है।

इस पुस्तक का उद्देश्य है कि यह समझें कि संघर्ष के क्या कारण हैं, उन नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करें जिनसे हमारे जीवनों पर संघर्ष का असर पड़ता है, यह सीखें कि किस प्रकार अपने जीवनों से संघर्ष को दूर रखें।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org